6

कहानी-आधारित शिक्षणशास्त्र एक परिवर्तनकारी शिक्षण पद्धति

जय प्रकाश नारायण*

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा को अधिक आनंददायक, अनुभवजन्य और बाल-केंद्रित बनाने की दिशा में एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। इस संदर्भ में, कहानी-आधारित शिक्षण-पद्धति एक प्रभावशाली परिवर्तनकारी विकल्प के रूप में उभरती है। यह पद्धति बच्चों के भाषायी, संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास में सहायक होती है। कहानियाँ बच्चों की जिज्ञासा, कल्पनाशीलता, रचनात्मकता और संवेदनशीलता को पोषित करती हैं। प्राथमिक शिक्षक इस प्रक्रिया में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। वे कहानियों के चयन, प्रस्तुति और अनुभवात्मक शिक्षण के माध्यम से बच्चों को प्रेरित करते हैं। यद्यपि संसाधनों और प्रशिक्षण की कमी जैसी कुछ चुनौतियाँ हैं, परंतु एन.ई.पी. 2020, एन.सी.एफ.एस. 2022, निपुण भारत मिशन 2021 तथा जादुई पिटारा जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से इनका समाधान संभव है। लेख में यह स्पष्ट किया गया है कि कहानी केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि शिक्षण का एक बहु-आयामी, समावेशी और सशक्त माध्यम है, जिसे शिक्षक रचनात्मकता और संवेदनशीलता के साथ अपना सकते हैं। यह पद्धति शिक्षा को अधिक जीवंत और बच्चों के अनुकूल बनाती है।

शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का सशक्त माध्यम है। प्रारंभिक बाल्यावस्था से लेकर संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास तक की आधारशिला हमारी शैक्षिक प्रणाली पर निर्भर करती है। वर्तमान समय में यह दृष्टिकोण और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है, विशेषतया राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 के परिप्रेक्ष्य में, जिसने शिक्षा व्यवस्था में विविध मंतव्यों के साथ व्यापक सुधारों की संस्तुति की है। इस नीति के अंतर्गत शिक्षण को रोचक, व्यावहारिक एवं बच्चों के जीवनानुभवों से जोड़ने पर विशेष बल दिया गया है। इसी परिप्रेक्ष्य में कहानी-आधारित शिक्षण पद्धति एक अत्यंत प्रभावी शिक्षण रणनीति के रूप में उभरकर सामने आई है। यह पद्धति संचार के सबसे प्राचीन और प्राकृतिक माध्यमों में से एक है, जो अनुभवों को साझा करने, दूसरों को समझने तथा सीखने की प्रक्रिया को सहज बनाती है। विशेषकर बाल्यावस्था की शिक्षा में यह एक सशक्त और प्रभावशाली उपकरण के रूप में कार्य कर सकती है।

*शोधार्थी, हिंदी साहित्य (पीएच.डी.), दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 110 007

शिक्षण में कहानियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है, जिसकी जड़ें हमारे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में गहराई से निहित हैं। प्राचीन काल से ही भारत की मौखिक परंपराओं, लोककथाओं, पंचतंत्र, जातक कथाओं और महाकाव्यों ने ज्ञान, नैतिकता और जीवन मूल्यों को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित किया है। इन कहानियों ने न केवल शिक्षण को सजीव और रुचिकर बनाया, बल्कि जटिल अवधारणाओं को सरल ढंग से समझाने का माध्यम भी प्रदान किया। बच्चों के लिए कहानियाँ बाल-सुलभ माध्यम होती हैं, जो उनके अनुभव संसार से जुड़कर उनकी जिज्ञासा को जाग्रत करती हैं तथा भाषा, कल्पना, अभिव्यक्ति, भावनात्मक विकास और सामाजिक समझ को पोषित करती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—बुनियादी स्तर 2022 में भी अनुभवजन्य, आनंददायक और गतिविधि आधारित अधिगम पर बल दिया गया है, जहाँ कहानी-आधारित शिक्षण एक प्रभावशाली उपकरण के रूप में उभरता है। शिक्षण में कहानियों की उपयोगिता केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह बच्चों को गहराई से सोचने, समझने और सीखने की प्रक्रिया में सहजता से प्रवाहित करती है। इस प्रकार, कहानियाँ शिक्षा को न केवल जीवंत बनाती हैं, बल्कि मूल्यपरक, समावेशी और बहु-आयामी अधिगम के द्वार भी खोलती हैं।

वक्त के साथ बदलती कहानी की अमिट प्रासंगिकता

कहानी मानव सभ्यता के विकास में एक अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक, कहानियाँ न केवल ज्ञान, संस्कृति और मूल्यों को संप्रेषित करने का माध्यम रही हैं, बल्कि उन्होंने सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ करने और मनोरंजन प्रदान करने में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यही कारण है कि कहानियाँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी कि प्राचीन काल में थीं। कथा कहने की परंपरा जितनी पुरानी मानव सभ्यता है, उतनी ही समृद्ध और सजीव भी है। जब भाषा का प्रारंभिक विकास हो रहा था, तब मनुष्य अपने अनुभवों, भावनाओं और ज्ञान को चित्रों, प्रतीकों और फिर कथाओं के माध्यम से साझा करता था। यही कथाएँ पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते हुए ज्ञान, आस्थाएँ, मूल्य और सांस्कृतिक परंपराओं को आगे बढ़ाने का सशक्त साधन बन गईं।

प्राचीन भारत में वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत और पुराणों में गूढ़ तात्विक विचारों को जनसाधारण के लिए बोधगम्य बनाने हेतु कथा शैली का प्रयोग किया गया। पंचतंत्र और हितोपदेश जैसे ग्रंथों ने पशु-पक्षियों के माध्यम से नैतिक शिक्षाएँ दीं, जो आज भी बाल शिक्षा में अत्यंत उपयोगी हैं। इसी प्रकार, बौद्ध धर्म में जातक कथाएँ बुद्ध के पूर्व जन्मों की कहानियाँ थीं, जो करुणा, त्याग और सह-अस्तित्व जैसे मूल्यों को उजागर करती थीं।

मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन के दौरान कहानियों और लोककथाओं का प्रयोग जनजागरण के प्रभावशाली माध्यम के रूप में हुआ। कबीर, तुलसी, मीरा जैसे संतों ने अपने उपदेशों को सहज भाषा और कथारूप में प्रस्तुत कर व्यापक जनसमूह तक पहुँचाया। इसी काल में राजा-रानी, वीरता और

प्रेम की लोककथाएँ जनमानस की चेतना में गहराई से समाहित हो गईं।

आधुनिक काल में कहानी लेखन ने एक सशक्त साहित्यिक विधा का रूप ले लिया। प्रेमचंद, रवीन्द्रनाथ टैगोर, शरत चंद्र जैसे रचनाकारों ने सामाजिक कुरीतियाँ, वर्ग संघर्ष, स्त्री विमर्श आदि विषयों पर कहानियाँ लिखीं। कहानी अब केवल मनोरंजन का साधन नही रही, बल्कि सामाजिक चेतना जगाने का प्रभावशाली माध्यम बन गईं।

वर्तमान समय में कहानियों की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। डिजिटल माध्यमों पर कहानियाँ ऑडियो, वीडियो और एनिमेशन जैसे स्वरूपों में लोकप्रिय हो रही हैं। शिक्षाशास्त्र में भी कहानियों को एक प्रभावशाली शिक्षण उपकरण के रूप में स्वीकार किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कहानी-आधारित शिक्षण को विशेष महत्व दिया गया है, विशेषकर प्रारंभिक एवं प्राथमिक शिक्षा में। यह पद्धति बच्चों में आलोचनात्मक चिंतन, भाषा कौशल, कल्पनाशक्ति और नैतिक मूल्यों के विकास को प्रोत्साहित करती है। अतः यह स्पष्ट है कि प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक, कहानियाँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहीं, बल्कि वे ज्ञान, मूल्य, संस्कृति और शिक्षा की संवाहक रही हैं और भविष्य में भी वे अपनी स्थायी प्रासंगिकता बनाए रखेंगी।

शिक्षा में कहानी की शक्ति— एन.ई.पी. 2020 के आलोक में एक विश्लेषण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारत में शिक्षा के क्षेत्र में एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है, जिसमें कहानी-आधारित शिक्षण एक परिवर्तनकारी शिक्षण पद्धति के रूप में उभरता है। यह न केवल बच्चों के बौद्धिक और भावनात्मक विकास को बढ़ावा देता है, बल्कि उनकी रचनात्मकता, नैतिकता और सांस्कृतिक जागरूकता को भी समृद्ध करता है।

अनुच्छेद 2.5—प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) की नींव

इस अनुच्छेद में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) के लिए एक समग्र, लचीली और गतिविधि-आधारित पाठ्यचर्या की रूपरेखा प्रस्तुत की गई है, जो 3 से 6 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के लिए उपयुक्त है। इस संदर्भ में कहानी सुनाना एक अत्यंत प्रभावशाली शिक्षण विधि के रूप में चिह्नित किया गया है, जो बच्चों के भाषा विकास, संज्ञानात्मक कौशल तथा सामाजिक-भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ावा देता है। इस विधि का मुख्य उद्देश्य बच्चों में प्रारंभिक साक्षरता और संचार कौशल का विकास करना है। यह उन्हें उनकी मातृभाषा या स्थानीय भाषा में सीखने के लिए प्रेरित करता है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बहुभाषिक शिक्षा के लक्ष्य के अनुरूप है। कहानियाँ बच्चों की कल्पनाशीलता और जिज्ञासा को प्रोत्साहित करती हैं। उदाहरण के लिए, स्थानीय लोककथाएँ और पारंपरिक कहानियाँ न केवल बच्चों को उनकी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ती हैं, बल्कि उनमें भारतीय मूल्यबोध और नैतिकता को भी विकसित करती हैं।

इस अनुच्छेद में शिक्षकों को सुझाव दिया गया है कि वे ऐसी कहानियाँ चुनें जो आयु-उपयुक्त हों और बच्चों की रुचि बनाए रखें। 'कहानियाँ, कविताएँ और गीत' को एक अंतःक्रियात्मक शिक्षण उपकरण

के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो बच्चों के लिए शिक्षण को आनंददायक और अर्थपूर्ण बनाता है। उदाहरणस्वरूप, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा विकसित प्रथम कक्षा की पुस्तक *सारंगी* के प्रथम अध्याय में कहानी और कविता दोनों को समाहित किया गया है। कहानी 'मीना का परिवार' बच्चों को अपने परिवार से परिचय कराने में सहायक है। वहीं कविता 'चंदा मामा दूर के' उनकी कल्पनाशक्ति को पंख देती है और उन्हें उत्सुकता के साथ चाँद के विषय में जानने के लिए प्रेरित करती है।

अनुच्छेद 2.7— प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) में शिक्षण विधियाँ

इस अनुच्छेद में कहानी-आधारित शिक्षण को एक प्रमुख शिक्षण रणनीति के रूप में रेखांकित किया गया है। यह विधि बच्चों की सुनने, बोलने और भावनात्मक समझ को विकसित करने में अत्यंत सहायक मानी गई है। इसका उद्देश्य कहानी के माध्यम से बच्चों में सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करना है, जिससे शिक्षण प्रक्रिया रटने की प्रवृत्ति से हटकर अनुभव-आधारित बन सके, जो कि एन.ई.पी. 2020 का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है। कहानियाँ बच्चों में नैतिक मूल्यों (जैसे— सहानुभूति, ईमानदारी) तथा सामाजिक कौशलों (जैसे— सहयोग, संवाद) के विकास में सहायक होती हैं। उदाहरण के रूप में पंचतंत्र की कहानी 'चतुर खरगोश और क्रूर शेर' बच्चों को बुद्धिमत्ता, साहस और नैतिकता का पाठ पढ़ाती है। इसी प्रकार, स्थानीय लोककथाएँ भी बच्चों के सामाजिक व्यवहार और नैतिक समझ को विकसित करने में प्रभावी होती हैं। इन शिक्षण विधियों के माध्यम से बच्चे सीखने की प्रक्रिया में न केवल आनंद अनुभव करते हैं, बल्कि जीवनोपयोगी मूल्यों को भी आत्मसात करते हैं। 'बुद्धिमानी से किसी भी बड़ी समस्या का हल किया जा सकता है।' शिक्षकों को कहानी सुनाने को अंत: क्रियात्मक बनाने के लिए प्रश्नोत्तर सत्र, चर्चा और रचनात्मक गतिविधियों (जैसे कहानी को नाटक के रूप में प्रस्तुत करना) को सम्मिलित करने की सलाह दी गई है। यह अनुच्छेद कहानी सुनाने को एक बहु-आयामी शिक्षण विधि के रूप में स्थापित करता है, जो बच्चों के लिए शिक्षा को रुचिकर और प्रासंगिक बनाता है।

> "प्रारंभिक बाल्यावस्था पाठ्यक्रम में लचीला, बहु-आयामी, बहुस्तरीय, खेल-आधारित, गतिविधि-आधारित और पूछताछ-आधारित शिक्षण शामिल होना चाहिए, जिसमें प्रारंभिक साक्षरता और संख्यात्मकता, विशेष रूप से कहानी-आधारित शिक्षण के माध्यम से आधारभूत साक्षरता शामिल हो..."
>
> *— एन.ई.पी. 2020*

अनुच्छेद 4.7— प्राथमिक शिक्षा में पाठ्यचर्या और शिक्षण विधियाँ

इस अनुच्छेद में प्राथमिक शिक्षा (कक्षा 1 से 5) तक के लिए एक गतिविधि-आधारित और अनुभव-आधारित पाठ्यचर्या पर विशेष बल दिया गया है। कहानी-आधारित शिक्षण को एक ऐसी प्रभावशाली पद्धति के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो बच्चों को पाठ्यपुस्तकों से परे सोचने के लिए प्रेरित करती है। कहानियाँ बच्चों को जटिल अवधारणाओं,

जैसे— इतिहास, विज्ञान अथवा नैतिक शिक्षा को सरल, रोचक और अनुभवजन्य ढंग से समझने में सहायक होती हैं। उदाहरण के लिए, ऐतिहासिक कहानियाँ बच्चों को भारत के स्वतंत्रता संग्राम जैसे प्रसंगों से जोड़ सकती हैं। विज्ञान से संबंधित कहानियाँ, जैसे— चाँद, तारे, सूर्य आदि खगोलीय पिंडों की कहानियाँ-बच्चों की जिज्ञासा को जाग्रत कर उनमें विज्ञान के प्रति रुचि प्रदान कर सकती हैं। नैतिक शिक्षा के लिए उपयुक्त कहानियाँ बच्चों में मानवता, सहयोग और सत्यनिष्ठा जैसे मूल्यों का विकास करती हैं।

इस अनुच्छेद में शिक्षकों को कहानी-आधारित शिक्षण को विषय-विशिष्ट रूप से पाठ्यचर्या में एकीकृत करने के लिए प्रेरित किया गया है। उदाहरणत गणितीय अवधारणाओं को समझाने के लिए गणित-कथाओं का प्रयोग बच्चों को रुचिकर और समझने योग्य अनुभव प्रदान करता है। यह विधि न केवल विषयों की गहन समझ विकसित करती है, बल्कि बच्चों को सक्रिय विद्यार्थी बनाने में भी सहायक होती है।

अनुच्छेद 4.23— मातृभाषा और बहुभाषी शिक्षा में कहानी-आधारित शिक्षण

इस अनुच्छेद में शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा या स्थानीय भाषा के प्रयोग पर विशेष बल दिया गया है। कहानी-आधारित शिक्षण, मातृभाषा में बच्चों को शिक्षा से जोड़ने का एक सशक्त और प्रभावी माध्यम माना गया है। मातृभाषा में कही गई कहानियाँ बच्चों के भाषा कौशल, जैसे— सुनना, बोलना और समझना को मजबूती प्रदान करती हैं और साथ ही बहुभाषी शिक्षा के उद्देश्यों को भी समर्थन देती हैं। स्थानीय भाषाओं में प्रस्तुत कहानियाँ न केवल बच्चों को उनकी सांस्कृतिक पहचान से जोड़ती हैं, बल्कि उन्हें भाषा सीखने में आत्मविश्वास भी प्रदान करती हैं। उदाहरणस्वरूप हिंदी, तमिल या बंगाली जैसी भाषाओं की लोककथाएँ बच्चों को उनकी भाषायी विरासत और संस्कृति से जोड़ने में सहायक होती हैं। शिक्षकों को स्थानीय और क्षेत्रीय कहानियों के चयन तथा कक्षा शिक्षण में उनकी प्रभावी प्रस्तुति हेतु मार्गदर्शन दिया गया है। बहुभाषी दृष्टिकोण को अपनाकर शिक्षक बच्चों को विभिन्न भाषाओं में कहानियाँ सुना सकते हैं, जिससे भाषा अधिगम अधिक समावेशी, सहज और प्राकृतिक बनता है। यह अनुच्छेद कहानी-आधारित शिक्षण को मातृभाषा-आधारित शिक्षा का एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली अंग मानता है, जो बच्चों के लिए शिक्षा को अधिक समावेशी, सुलभ और सार्थक बनाता है।

अनुच्छेद 11.3 और 11.6— शिक्षक प्रशिक्षण और शिक्षण विधियाँ

इन अनुच्छेदों में शिक्षक प्रशिक्षण में रचनात्मक और नवाचारी शिक्षण विधियों को सम्मिलित करने की आवश्यकता को रेखांकित किया गया है। कहानी-आधारित शिक्षण को एक ऐसी सृजनात्मक विधि के रूप में मान्यता दी गई है, जिसमें शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण प्रदान किए जाने की अनुशंसा की गई है। प्रशिक्षण का उद्देश्य है— शिक्षकों को कहानी सुनाने की कला में दक्ष बनाना, कक्षा को अधिक अंतःक्रियात्मक एवं आकर्षक बनाना, बच्चों की रुचि, पृष्ठभूमि और संवेदनशील आवश्यकताओं के अनुरूप कहानी चयन हेतु उन्हें सक्षम बनाना।

प्रशिक्षित शिक्षक नाटकीय प्रस्तुति, कठपुतली, चित्रों या डिजिटल संसाधनों के माध्यम से कहानी को और अधिक प्रभावी बना सकते हैं। उन्हें स्वर परिवर्तन, भाव-भंगिमा और सक्रिय सहभागिता जैसी तकनीकों में प्रशिक्षित किया जाना आवश्यक बताया गया है। साथ ही, शिक्षकों को कहानियों को समावेशी बनाने के लिए प्रेरित किया गया है, ताकि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों सहित सभी बच्चे कक्षा गतिविधियों में समान रूप से भाग ले सकें। इन अनुच्छेदों में यह स्पष्ट किया गया है कि कहानी सुनाना एक पेशेवर शिक्षण कौशल है, जिसके लिए विशेष प्रशिक्षण, संसाधनों और समझदारी की आवश्यकता होती है। बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र पर आधारित प्रशिक्षणों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत निम्नलिखित पहलुओं को विशेष महत्व दिया गया है— समग्र विकास की समझ, शिक्षण के मनोवैज्ञानिक आधार, खेल-आधारित एवं कहानी-आधारित शिक्षण, समावेशी-शिक्षा, मूल्य-आधारित शिक्षा।

कहानी-आधारित शिक्षण की परिभाषा और मूलभूत तत्व

कहानी-आधारित शिक्षण पद्धति एक ऐसी शिक्षण विधि है जिसमें शिक्षण की प्रक्रिया को कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है, ताकि अधिगम को अधिक अर्थपूर्ण, रोचक और बच्चों के अनुभवों को संसार से जुड़ा बनाया जा सके। यह पद्धति बच्चों की कल्पनाशीलता, भावनात्मक जुड़ाव और सक्रिय सहभागिता को बढ़ावा देती है। इसमें प्रयुक्त प्रमुख घटक—पात्र , कथानक, संदर्भ, भावनाएँ और संवाद न केवल कहानी को जीवंत बनाते हैं, बल्कि जटिल शैक्षिक अवधारणाओं को सहजता से समझने में भी सहायक होते हैं। इस विधि का उद्देश्य केवल ज्ञान का संप्रेषण नहीं, बल्कि बच्चों को सोचने, प्रश्न करने और अपने अनुभवों को साझा करने के लिए प्रेरित करना होता है। कहानी-आधारित शिक्षण पद्धति शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को वास्तविक जीवन अनुभवों से जोड़ता है, जिससे बच्चे अपने जीवन, परिवेश और समाज के साथ गहरे स्तर पर जुड़ाव महसूस करते हैं। इस प्रकार, यह पद्धति न केवल शैक्षणिक विषयवस्तु को रोचक बनाती है, बल्कि मूल्यबोध, सहानुभूति और सामाजिक समझ का विकास भी सुनिश्चित करती है।

कहानी-आधारित शिक्षण के उद्देश्य

कहानी-आधारित शिक्षण के बहुपक्षीय उद्देश्य होते हैं जो बच्चों के समग्र विकास को ध्यान में रखते हैं।

संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक और भाषा कौशल का विकास

कहानियाँ बच्चों के सोचने-समझने की क्षमता (संज्ञानात्मक कौशल) को सुदृढ़ करती हैं, क्योंकि वे घटनाओं के क्रम, कारण-परिणाम और पात्रों के व्यवहार को विश्लेषित करना सीखते हैं। साथ ही, कथानकों में निहित भावनात्मक स्थितियाँ बच्चों की सामाजिक-भावनात्मक समझ को पोषित करती हैं, जैसे सहानुभूति, संवेदनशीलता और आत्मनियंत्रण। कहानी सुनने, कहने और उस पर चर्चा करने की प्रक्रिया भाषा कौशल (श्रवण, भाषण, पठन और लेखन) को भी समृद्ध करती है।

रचनात्मकता, कल्पनाशीलता और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा

कहानियाँ बच्चों को कल्पना की दुनिया में ले जाती हैं, जहाँ वे नए पात्र, स्थान और समाधान खोजते हैं। यह रचनात्मकता और कल्पनाशीलता को बल देती है। साथ ही, जब बच्चे कथानक की जटिलताओं को समझते हैं या वैकल्पिक अंत की कल्पना करते हैं, तो उनकी आलोचनात्मक सोच विकसित होती है।

मूल्य शिक्षा और नैतिक विकास में सहयोग

अधिकांश कहानियाँ जीवन-मूल्यों, नैतिकताओं और सामाजिक व्यवहारों को सहज रूप में प्रस्तुत करती हैं। सत्य, अहिंसा, करुणा, सहयोग, साहस और जिम्मेदारी जैसे मूल्य कहानियों के माध्यम से बच्चों तक सरलता से पहुँचते हैं। इससे उनमें नैतिक विकास और उचित व्यवहार की समझ विकसित होती है।

इस प्रकार, कहानी-आधारित शिक्षण न केवल शैक्षिक, बल्कि जीवनोपयोगी उद्देश्यों की पूर्ति का एक प्रभावी माध्यम है।

शिक्षण-अधिगम में कहानी-आधारित शिक्षण पद्धति के लाभ

शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में कहानी-आधारित शिक्षण पद्धति अनेक प्रकार से लाभकारी सिद्ध होती है। यह कठिन और जटिल विषयवस्तु को सहज, रोचक और बच्चों के अनुभव से जोड़कर प्रस्तुत करती है, जिससे सीखना बोझिल नहीं, बल्कि आनंददायक अनुभव बन जाता है। यह पद्धति हावर्ड गार्डनर द्वारा प्रतिपादित विविध बुद्धियों, जैसे— भाषिक, दृश्य-स्थानिक, पारस्परिक, व्यक्तिनिष्ठ, शारीरिक-गत्यात्मक आदि को संबोधित करती है, जिससे हर प्रकार के विद्यार्थी को सीखने का अवसर प्राप्त होता है। समावेशी कक्षा में, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए कहानियाँ दृश्य, श्रव्य और संवेदनात्मक माध्यमों से सीखने को सुलभ बनाती हैं। उदाहरणस्वरूप, दृश्य सहायताएँ, संकेत भाषा, अभिनय और स्पर्शात्मक संसाधन इन बच्चों के लिए कहानी को समझने और उससे जुड़ने का सशक्त साधन बनते हैं। विशेष रूप से भाषा शिक्षण में यह पद्धति अत्यंत प्रभावी है, क्योंकि यह बच्चों को सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के कौशलों में स्वाभाविक रूप से संलग्न करती है। इस प्रकार, कहानी-आधारित शिक्षण न केवल संज्ञानात्मक विकास में सहायक है, बल्कि यह भावनात्मक, सामाजिक और भाषायी अधिगम को भी समग्र रूप से प्रोत्साहित करता है।

कैसे करें कहानी-आधारित शिक्षण को लागू

कहानी-आधारित शिक्षण को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए सुनियोजित रणनीतियाँ अपनाना आवश्यक है। सबसे पहले, उपयुक्त कहानियों का चयन करना महत्वपूर्ण होता है, जो बच्चों की आयु, विकास स्तर, रुचि और पाठ्य-विषय से मेल खाती हों। कहानी में बच्चों से संबंधित पात्र, संदर्भ और समस्याएँ हों, ताकि वे उससे जुड़ाव महसूस कर सकें। कहानी कहने की शैली संवादात्मक होनी चाहिए, जिसमें शिक्षक चित्रों, ध्वनियों, हाव-भाव और अभिनय का उपयोग करके कहानी को जीवंत बनाएँ। इससे बच्चों की जिज्ञासा और रुचि बनी रहती है। इसके साथ ही, बच्चों को कहानी के अनुभव में सहभागी

बनाना आवश्यक है, जैसे— पात्रों के दृष्टिकोण से चर्चा करना, सवाल पूछना, कथानक पर प्रतिक्रिया देना या नाट्य रूपांतरण के माध्यम से कहानी को प्रस्तुत करना। कला-गतिविधियाँ जैसे कि कहानी के किसी दृश्य का चित्र बनाना, पात्रों के संवाद लिखना या वैकल्पिक अंत रचना भी बच्चों की रचनात्मकता को बढ़ावा देती हैं और मूल्यांकन का प्रभावी माध्यम बनती हैं। 'सिर्फ कहानी सुनाना ही नहीं, बल्कि बच्चे को उस कहानी में सहभागी बनाना ही इस पद्धति की कुंजी है।' जब बच्चे स्वयं को कहानी का हिस्सा महसूस करते हैं तभी वह अनुभवजन्य और आनंददायक अधिगम की ओर अग्रसर होते हैं।

कहानी-आधारित शिक्षण में प्राथमिक शिक्षक की भूमिका

कहानी-आधारित शिक्षण एक ऐसी प्रभावी शिक्षण पद्धति है, जो बच्चों की कल्पनाशक्ति, भाषिक कौशल और नैतिक समझ को सृजनात्मक रूप से विकसित करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इस पद्धति को विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर अपनाने की अनुशंसा की गई है, क्योंकि यह शिक्षा को रोचक, अर्थपूर्ण और बाल-केंद्रित बनाती है। इस परिप्रेक्ष्य में प्राथमिक शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण एवं परिवर्तनकारी हो जाती है।

प्राथमिक शिक्षक केवल पाठ्य सामग्री प्रस्तुत करने वाले अध्यापक नहीं है बल्कि एक प्रेरक, मार्गदर्शक और सृजनशील सहयोगी की भूमिका में कार्य करते हैं। वे कहानियों के माध्यम से जटिल अवधारणाओं को सरल, जीवनोपयोगी और बोधगम्य बनाते हैं। उदाहरणस्वरूप, गणित की बुनियादी अवधारणाएँ जैसे जोड़, घटाव या मापन— एक किसान की कहानी या बाजार की घटनाओं से जोड़कर बच्चों को सहजता से सिखाई जा सकती हैं।

शिक्षण की इस विधि में प्राथमिक शिक्षक का पहला कार्य है उपयुक्त कहानियों का चयन, जो न केवल पाठ्यक्रम से संगत हों, बल्कि बच्चों की भाषा, रुचि और सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से भी जुड़ी हों। शिक्षक लोककथाओं, पंचतंत्र, जातक कथाओं, समसामयिक प्रसंगों और बाल साहित्य के विभिन्न स्रोतों से ऐसी कहानियाँ चुन सकते हैं जो बच्चों में जिज्ञासा, सहानुभूति, नैतिक बोध और कल्पनाशीलता का संवर्धन कर सकें। साथ ही, शिक्षक को कहानी प्रस्तुत करने की कला में दक्ष होना आवश्यक है, जिसमें स्वर का उतार-चढ़ाव, हाव-भाव, दृश्य सामग्री, कठपुतली और नाट्य-अभिनय जैसे तत्वों का उपयोग सम्मिलित होता है। कहानी के माध्यम से शिक्षक केवल जानकारी नहीं देते, बल्कि बच्चों को सोचने, प्रश्न करने, अनुभव साझा करने और सीखने की प्रक्रिया में भागीदार बनने के अवसर प्रदान करते हैं। यह प्रक्रिया शिक्षार्थी-केंद्रित और संवादात्मक होती है, जिसमें शिक्षक स्वयं एक सहभागी के रूप में बच्चों के साथ जुड़ते हैं। कहानी सुनाने के बाद की गईं गतिविधियाँ, जैसे— चर्चा, चित्र बनाना, भूमिका निभाना, कविता लेखन या समस्या समाधान आदि बच्चों के बहु-आयामी विकास को सुनिश्चित करती हैं। इसके अतिरिक्त, कहानी-आधारित शिक्षण से शिक्षक बच्चों की भाषा दक्षता, श्रवण कौशल,

कल्पनाशक्ति, सामाजिक मूल्यबोध और भावनात्मक बुद्धिमत्ता को भी मजबूती प्रदान करते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुच्छेद 4.5 और 5.6 में यह स्पष्ट रूप से उल्लिखित है कि प्राथमिक स्तर पर शिक्षा को खेल, गतिविधि और कहानी-आधारित बनाया जाना चाहिए, ताकि बच्चे स्वाभाविक रूप से और आनंदपूर्वक सीख सकें। इस दृष्टिकोण से, कहानी-आधारित शिक्षण को कार्यान्वित करने में प्राथमिक शिक्षक की भूमिका निस्संदेह केंद्रीय और निर्णायक बन जाती है। यदि शिक्षकों को इस दिशा में उचित प्रशिक्षण, संसाधन और प्रेरणा प्रदान की जाए, तो वे बच्चों में आजीवन अधिगम की नींव को दृढ़ कर सकते हैं। अतः आवश्यक है कि शिक्षकों को न केवल कहानी-आधारित शिक्षण तकनीकों से परिचित कराया जाए, बल्कि उन्हें स्वतंत्र रूप से कहानियाँ गढ़ने और प्रस्तुत करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाए, जिससे उनका शिक्षण प्रभावशाली, जीवंत और अर्थगर्भित बन सके।

इस प्रकार, कहानी-आधारित शिक्षण में प्राथमिक शिक्षक केवल एक शिक्षक नहीं, बल्कि एक संवेदनशील कथावाचक, मार्गदर्शक और बाल मनोविज्ञानी की भूमिका में आते हैं। वे स्थानीय समुदायों, जैसे दादा-दादी या स्थानीय कथावाचकों को कक्षा में आमंत्रित कर सकते हैं, जिससे बच्चों को नई कहानियाँ सुनने का अवसर मिलता है और सामुदायिक जुड़ाव भी सशक्त होता है। यह शिक्षा को बच्चों के जीवन से जोड़कर, एक गहरी, व्यक्तिगत और स्थायी सीख में परिवर्तित कर देता है।

कहानी-आधारित शिक्षण की कुछ प्रमुख चुनौतियाँ और उनके समाधान

कहानी-आधारित शिक्षण एक प्रभावशाली और बाल-केंद्रित पद्धति है, लेकिन इसे प्रभावशाली ढंग से क्रियान्वित करने में कुछ व्यावहारिक चुनौतियाँ सामने आती हैं, जिनका समाधान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दिशानिर्देशों के अनुरूप किया जा सकता है।

शिक्षकों को इस विधा में प्रशिक्षण की कमी प्रमुख समस्या है। कई शिक्षक कहानी सुनाने की कला, प्रस्तुति की तकनीक और सामग्री चयन में पर्याप्त दक्ष नहीं होते, जिससे यह विधि कक्षा में प्रभावी रूप से लागू नहीं हो पाती। इसके समाधानस्वरूप, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कहानी-आधारित शिक्षण की तकनीकों को सम्मिलित किया जाना चाहिए। कार्यशालाओं, ऑनलाइन पाठ्यक्रमों और अनुभवी कथावाचकों के सहयोग से शिक्षकों को व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया जा सकता है।

दूसरी चुनौती संसाधनों की कमी से जुड़ी है, विशेषकर ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में जहाँ डिजिटल उपकरणों, पुस्तकों और दृश्य सामग्री का अभाव होता है। इस स्थिति में स्थानीय कहानियों का उपयोग, सामुदायिक सहयोग तथा सरकारी योजनाओं के माध्यम से संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकती है। साथ ही, डिजिटल कहानी पुस्तकें, ऑडियो कहानियाँ और ओपन-सोर्स संसाधन भी शिक्षकों के लिए उपयोगी विकल्प हो सकते हैं।

तीसरी चुनौती समय की कमी है। कई बार शिक्षकों को पाठ्यक्रम पूरा करने के दबाव में कहानी-आधारित शिक्षण को प्राथमिकता नहीं मिल पाती। इसका समाधान यह है कि कहानियों को भाषा, सामाजिक अध्ययन या नैतिक शिक्षा जैसे विषयों के साथ एकीकृत किया जाए, ताकि शिक्षण प्रभावी तो बने ही, साथ ही पाठ्यक्रम की पूर्ति भी सुगमता से हो सके।

एक अन्य चुनौती विविधता के प्रति संवेदनशीलता की कमी है। विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से आने वाले बच्चों के लिए उपयुक्त और प्रासंगिक कहानियाँ ढूँढ़ना शिक्षकों के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है। इस दिशा में शिक्षक स्थानीय और वैश्विक कहानियों के संतुलित चयन के माध्यम से सभी बच्चों को समावेशी अनुभव दे सकते हैं, जिससे प्रत्येक बच्चे कक्षा में सम्मिलित हों और सम्मानित महसूस करे।

इस प्रकार, यदि इन चुनौतियों के समाधान नीति आधारित दृष्टिकोण से किए जाएँ, तो कहानी-आधारित शिक्षण न केवल एक रचनात्मक विधि के रूप में, बल्कि प्रभावी अधिगम के माध्यम के रूप में शिक्षा प्रणाली में मजबूती से स्थापित हो सकता है।

एन.ई.पी. 2020 के संदर्भ में कहानी-आधारित शिक्षण का भविष्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारत की शिक्षा व्यवस्था को अधिक समग्र, रचनात्मक और बाल-केंद्रित बनाने की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल की है। इस नीति के मूल में अनुभवात्मक, संवादात्मक और अर्थपूर्ण अधिगम को प्रोत्साहन देने का उद्देश्य निहित है। इसी संदर्भ में कहानी-आधारित शिक्षण एक प्रभावशाली और सशक्त विधा के रूप में उभर कर सामने आता है, जो एन.ई.पी. 2020 के उद्देश्यों से पूरी तरह समन्वित है।

कहानी-आधारित शिक्षण न केवल ज्ञान हस्तांतरण का माध्यम है, बल्कि यह संवेदनशीलता, नैतिक मूल्यों, सृजनात्मकता और सामाजिक समझ के विकास में भी सहायक होता है। जब बच्चे कहानियों के पात्रों, घटनाओं और अनुभवों से जुड़ते हैं, तो वे केवल भाषा कौशल ही नहीं, बल्कि समस्या-समाधान, आलोचनात्मक सोच और सहानुभूति जैसे जीवनोपयोगी कौशल भी विकसित करते हैं।

एन.ई.पी. 2020 में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता मिशन (एफ.एल.एन.) के अंतर्गत कहानी-आधारित विधियों को विशेष महत्व दिया गया है। कहानियाँ न केवल भाषा शिक्षण में, बल्कि गणित और पर्यावरण अध्ययन जैसे विषयों में भी बच्चों की रुचि जगाने और गहरी समझ विकसित करने का कार्य करती हैं। इसके अतिरिक्त, यह पद्धति मातृभाषा-आधारित शिक्षा और बहुभाषी शिक्षण को भी मजबूती प्रदान करती है। नीति में शिक्षक की भूमिका सूचना प्रदाता से बदलकर मार्गदर्शक, प्रेरक और सहभागी की हो गई है। इस रूपांतरण में कहानी एक सजीव माध्यम के रूप में कार्य करती है,

जो शिक्षक और विद्यार्थी के बीच सार्थक संवाद को संभव बनाती है।

भविष्य की दृष्टि से यह स्पष्ट है कि कहानी-आधारित शिक्षण का प्रयोग केवल प्राथमिक शिक्षा तक सीमित नहीं रहेगा। यह माध्यमिक स्तर पर भी साहित्य, सामाजिक विज्ञान, इतिहास और जीवन कौशल जैसे विषयों के शिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। साथ ही, डिजिटल तकनीकों, ऑडियो-विज़ुअल संसाधनों, संवादात्मक मंच और स्थानीय लोककथाओं के उपयोग से इसकी पहुँच और प्रभावशीलता और भी बढ़ेगी।

राष्ट्रीय दस्तावेजों में स्थान

कहानी-आधारित शिक्षण को राष्ट्रीय शिक्षा दस्तावेजों में विशेष महत्व प्रदान किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक वर्षों के लिए खेल व कहानी-आधारित, आनंददायक और अनुभवजन्य अधिगम को प्रमुख स्थान दिया गया है। नीति यह स्पष्ट करती है कि प्रारंभिक शिक्षा का उद्देश्य केवल वर्णमाला और संख्याओं की पहचान नहीं, बल्कि बच्चों के समग्र विकास के लिए संवेगात्मक, सामाजिक और संज्ञानात्मक क्षमताओं का संवर्धन है, जिसमें कहानियाँ एक प्रभावी माध्यम के रूप में कार्य करती हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) 2022 में अधिगम अनुभवों को संरचित करते समय कहानियों की भूमिका को प्रमुख रूप से सम्मिलित किया गया है। यह रूपरेखा कहती है कि कहानियाँ बच्चों की सोचने, समझने, कल्पना करने और व्यक्त करने की क्षमता को बढ़ाती हैं तथा इन्हें प्रतिदिन की कक्षा गतिविधियों में समाहित किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, जादुई पिटारा, जो बुनियादी स्तर के लिए रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा विकसित शिक्षण-सहायक सामग्री है, उसमें भी कहानियाँ केंद्र में हैं— जहाँ पुस्तकें, ऑडियो-वीडियो, कठपुतलियाँ और अन्य संसाधनों के माध्यम से बच्चों को विविध कहानियों से जोड़ा गया है। निपुण भारत मिशन के अंतर्गत भी एफ.एल.एन. (बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान) लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कहानी-आधारित शिक्षण को एक आवश्यक रणनीति माना गया है। इन सभी पहलुओं से यह स्पष्ट होता है कि कहानियाँ न केवल शिक्षण की सहायक सामग्री हैं, बल्कि वे नीति, पाठ्यचर्या और कार्यक्रमों की दृष्टि से भी एक केंद्रीय भूमिका निभाती हैं।

> "कहानी सुनाने से कल्पनाशक्ति बढ़ती है और शब्दावली समृद्ध होती है। बच्चों को हर दिन कहानियाँ सुनने और सुनाने के अवसर दिए जाने चाहिए"।
>
> — *निपुण भारत मिशन 2021*

निष्कर्ष

कहानी-आधारित शिक्षण एक प्राचीन कला है, जिसकी आधुनिक शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में भी अत्यंत प्रासंगिकता है। एन.ई.पी. 2020 के आलोक में यह पद्धति शिक्षा का एक अभिन्न अंग बन सकती है, जो

बच्चों के मन, मस्तिष्क और भावना को समान रूप से स्पर्श करती है। यह शिक्षण को केवल जानकारी नहीं, बल्कि प्रेरणा और कल्पना से समृद्ध बनाती है।

आवश्यक है कि प्राथमिक शिक्षकों को इस विधा में दक्ष बनाया जाए, उन्हें प्रशिक्षण, संसाधन और समुदाय का सहयोग प्रदान किया जाए, ताकि वे कहानियों के माध्यम से शिक्षा को अधिक आनंददायक, अर्थगर्भित और प्रभावशाली बना सकें। इस प्रकार, कहानी-आधारित शिक्षण न केवल बच्चों को सीखने का आनंद प्रदान करता है, बल्कि उन्हें जीवन के लिए तैयार करने की दिशा में एक सशक्त कदम सिद्ध हो सकता है।

संदर्भ

ईगन, के. 1986. *टीचिंग ऐज स्टोरीटेलिंग— एन अल्टरनेटिव अप्रोच टू टीचिंग एंड करिकुलम इन द एलीमेंट्री स्कूल*. यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस.

एलिस, जी. और जे. ब्रूस्टर. 2014. *टेल इट अगेन! द स्टोरीटेलिंग हैंडबुक फॉर प्राइमरी इंग्लिश लैंग्वेज टीचर्स*. ब्रिटिश काउंसिल.

बेस्ट, जे.डब्ल्यू. और जे.वी. कान. 2006. *रिसर्च इन एजुकेशन* (10वाँ संस्करण). पियर्सन एजुकेशन.

यूनेस्को. 2006. *एजुकेशन फॉर ऑल ग्लोबल मॉनिटरिंग रिपोर्ट— लिटरेसी फॉर लाइफ*. यूनेस्को.

रा.शै.अ.प्र.प. 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2023. कक्षा 1 'सारंगी'. पृ.सं 1–5. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2023. *जादुई पिटारा— खेल आधारित शिक्षण-सहायक सामग्री 2023*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2023. *दिशानिर्देश और संसाधन*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/ और https://diksha.gov.in/

राइट, ए. 1995. *स्टोरीटेलिंग विथ चिल्ड्रेन*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

राय, गोपाल. 2023. *हिन्दी साहित्य का इतिहास* (भाग-1). 1957–1975. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.

रॉबिन, बी.आर. 2016. *दी एजुकेशनल यूजेज ऑफ डिजिटल स्टोरी टेलिंग*. शैक्षिक अनुसंधान और साहित्य, यूनिवर्सिटी ऑफ ह्यूस्टन.

विष्णु शर्मा. 2017. *पंचतंत्र*. राजपाल एंड सन्स, दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

———. 2021. *निपुण भारत मिशन दिशानिर्देश*. स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली.